

1

نقد و سنجش - جملة حقوق و تفریباتی مختارین - کتبخانه جدیدی

وَاللّٰهُ يَخْبِرُكَ بِحَسَنِ الْتَوَاتُرِ

۳۶



کتابخانه جدیدی
کتابخانه جدیدی

JUNG ESTATE LIBRARY

کتابخانه جدیدی
کتابخانه جدیدی

تقریر
۱۹۲۲ء

۱۰۸۰

AR JUNG EST
(Oriental Socy)
URDU PRINTER.
















کتاب اللیل الرحیمنا الرحیم

بعد حمد خداے رحیم اور صلوٰۃ و ثناء ہے جناب رسول کریم عرض کرتا ہوں
 احقر بندگان درگاہ احدی و اقرنیازندان بارگاہ صمدی سید جواد علی رضوی
 آسمانی عسری کہ اندون حسب خواہش بعض اجاب رسالہ انصیا و العیون چاہا ہے
 تالیف جناب میرزا اسدی خان صاحب صفوی جو زبان فارسی میں تھا بنظر ثواب
 و رفہ عام ترجمہ او کا زبان اردو عام فہم میں اس احقر نے لکھا جانا چاہئے کہ
 بعض کتب معتبرہ میں حضرت آئمہ طاہرین سلام اللہ علیہم اجمعین اور شاہ
 اکرام سی فوارہ شاہدہ صورت قبر نبوت وغیرہ حضرت سید المرسلین علیہم السلام

صلوٰۃ اللہ علیہ والہ الطاہرین واصحابہ المضمین اور نقوش و اشکال اور
 کسرات و مقطعات اور سورتوں قرآن شریف کی مذکورین جگہ صرف دیکھنے
 سے ہر نماز کے بعد ثواب خاص لکھا ہے لہذا موافق مضمون ہدایت مشون
 حدیث مشہور من سمع شہداء من الثواب فصنعہ کان لہ اجرہ
 وان لم یکن علی ما بلغہ یعنی جو کوئی سنے کوئی امر ثواب کا پس
 بجائے اسکو حاصل ہوگا اوس شخص کو اجر اوس امر کا اگرچہ درحقیقت اوس
 طور پر نحو جیسا کہ او سکھایا ہے۔ الفرض چونکہ دیکھنا ان نقوش و اشکال
 اور اسماء عظام کا لڑکے اور جوان اور بوڑھے اور ادھر غرض عورت اور
 مرد کے لئے باعث ثواب امدادی بخش حتم ہے لہذا نام اس رسالہ کا
 ثواب العیون رکھا واللہ الموفق والمعین بیان صورت مہربوت
 جناب رسول مقبول حضرت علی ابن ابی طالب علیہ الصلوٰۃ والسلام
 منقول ہے کہ جو کوئی مہربوت کو بعد نماز صبح کے دیکھے پچاس حج
 حضرت آدم کا ثواب پادے اور اگر بعد نماز ظہر دیکھے دس حج حضرت ابراہیم
 علیہ السلام کا ثواب پادے اور اگر بعد نماز مغرب کے دیکھے سات سو حج
 حضرت عیسیٰ کا ثواب پادے اور اگر بعد نماز عشاء کے دیکھے اغد ثواب پادے
 کیا اوسے بزرگ مثل حج حضرت رسول مقبول کی تیل اور نہر بہت آوارہ گئے
 اور نہر بہر کوں کو سیر کیا۔ واللہ اعلم بالصواب۔ سورۃ زمر ص ۲۱

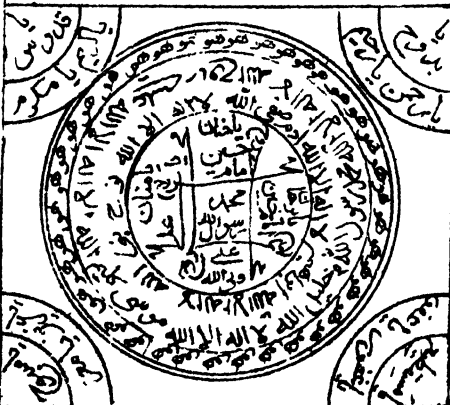
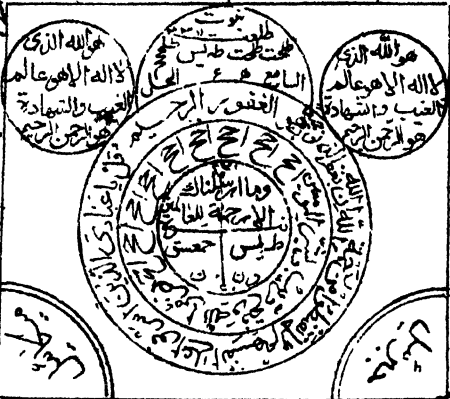
صلوٰۃ اللہ علیہ والہ الطاہرین واصحابہ المضمین اور نقوش و اشکال اور

سورة يسير اليزيدية المسمي
بسم الله الرحمن الرحيم
الحمد لله الذي جعل القرآن آية على المؤمنين

الله لا اله الا هو الحي القيوم لا تافك سيرة ولا تؤذ صفا في الدنيا ولا في الآخرة ولا يؤذيهم ولا يؤذيهم ولا يؤذيهم			
			
			
			
			

والا ياذنه يعلم ما بين ايديهم وما خلفهم ولا يحيطون بشيء

هو الله الخالق البارئ المصور له الأسماء الحسنة من له السما والأرض وهو العزيز الحكيم ۝



وَالْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْمَلِكُ الْقَدِيمُ السَّلَامُ الْمَوْجِبُ لِحَقِّ الْمُسْلِمِينَ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ مُبِينٌ

ایضاً دوت

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

مہرِ نبوت

پاجت علی

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ



١٢٠

والله اعلم

١٧٧

وَمِنْ عَمَلِهِ أَنْ يَأْتِيَ بِنَاثِرٍ عَلَى الْغُرُفِ وَيَأْتِيهِ مِنَ الْطُفُولِ كَمَا يُتْلَى ۖ وَسَمِعَ إِسْمَاعِيلُ يَدْعُوهُ فَرَفَعَهُ وَإِذْ تَبَرَأَ مِنْ آلِهِ يَمْنًا فَعَمَّوَا كَافِرِينَ

عَنْهُ لِمَا ذَكَرَ تَعْلَمُ مَا سَأَلْتَهُمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَحِطُّونَ

وَابَارِئْ لَهُمْ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَأَلْزِمِهَا حَبْطًا وَقَرَارًا وَرَأْسًا

[illegible]

[illegible]

A diamond-shaped grid containing the 28 lunar mansions (constellations) in Chinese characters, arranged in four rows of seven.

10	10	10	10
10	10	10	10
10	10	10	10
10	10	10	10

A 5x5 grid of handwritten Arabic numerals (0-9) in Urdu script, tilted at an angle. The grid contains the following digits (row by row, from top to bottom):

۰	۱	۲	۳	۴
۵	۶	۷	۸	۹
۰	۱	۲	۳	۴
۵	۶	۷	۸	۹
۰	۱	۲	۳	۴

جستجو -			
۸	الله	۸۱	محمد
رسول	الله	۸۲	۸۳
۸۴	۸۵	۸۶	۸۷
۸۸	۸۹	۹۰	۹۱

سبح الله	لا ح	ح	سبح الله
ل	لا ح	ح	ب
ط	و	٢	ت
٤	١	١	لا ح

مراد علی حق بنیامین

م	و	ن	٧	ق	ف	م
٦	٢٥	٣٠	ل	٣٥	٤١	٨
ج	٣١	٤٦	ا	١١٩	٦٥	ز
ي	ل	٦	ب	ل	١٥١	١١
ق	٤٢	٣٨	٦	٥٥	١٧٨	ل
د	٦٥	٣٣	ل	٦٥	=	٦
د	و	م	ب	ل	ل	ل

طوطی علی حق نمونہ

[illegible]

مر الله الرحمن الرحيم

[illegible]

الاحم الاحم الاحم الاحم الاحم الاحم الاحم الاحم الاحم الاحم الاحم
الاحم الاحم الاحم الاحم الاحم الاحم الاحم الاحم الاحم الاحم الاحم

10 ۱۷۷۹ ۴۲۳ ۵۹۷۵ ۴۲۳ ۱۷۷۹

١٧٧٧

الله ان الله اعلم

۱۲۵ در عهد در عهد در عهد

[illegible]

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي هَدَانَا لِهٰذَا وَمَا كُنَّا لَكَ شَاكِرِيْنَ

وَالْمَلِكُ

دکتر محمد علی قزوینی

۳۲۹
حکیم

١٢٤٢

٣٨٩

قَالَ

١٠٩

ገጽ ፩

[illegible][illegible]

٢٩٢	٢٩٣	٢٩٤	٢٩٥	٢٩٦	٢٩٧	٢٩٨	٢٩٩	٣٠٠	٣٠١	٣٠٢	٣٠٣	٣٠٤	٣٠٥	٣٠٦	٣٠٧	٣٠٨	٣٠٩	٣١٠	٣١١	٣١٢	٣١٣	٣١٤	٣١٥	٣١٦	٣١٧	٣١٨	٣١٩	٣٢٠	٣٢١	٣٢٢	٣٢٣	٣٢٤	٣٢٥	٣٢٦	٣٢٧	٣٢٨	٣٢٩	٣٣٠	٣٣١	٣٣٢	٣٣٣	٣٣٤	٣٣٥	٣٣٦	٣٣٧	٣٣٨	٣٣٩	٣٤٠	٣٤١	٣٤٢	٣٤٣	٣٤٤	٣٤٥	٣٤٦	٣٤٧	٣٤٨	٣٤٩	٣٥٠	٣٥١	٣٥٢	٣٥٣	٣٥٤	٣٥٥	٣٥٦	٣٥٧	٣٥٨	٣٥٩	٣٦٠	٣٦١	٣٦٢	٣٦٣	٣٦٤	٣٦٥	٣٦٦	٣٦٧	٣٦٨	٣٦٩	٣٧٠	٣٧١	٣٧٢	٣٧٣	٣٧٤	٣٧٥	٣٧٦	٣٧٧	٣٧٨	٣٧٩	٣٨٠	٣٨١	٣٨٢	٣٨٣	٣٨٤	٣٨٥	٣٨٦	٣٨٧	٣٨٨	٣٨٩	٣٩٠	٣٩١	٣٩٢	٣٩٣	٣٩٤	٣٩٥	٣٩٦	٣٩٧	٣٩٨	٣٩٩	٤٠٠	٤٠١	٤٠٢	٤٠٣	٤٠٤	٤٠٥	٤٠٦	٤٠٧	٤٠٨	٤٠٩	٤١٠	٤١١	٤١٢	٤١٣	٤١٤	٤١٥	٤١٦	٤١٧	٤١٨	٤١٩	٤٢٠	٤٢١	٤٢٢	٤٢٣	٤٢٤	٤٢٥	٤٢٦	٤٢٧	٤٢٨	٤٢٩	٤٣٠	٤٣١	٤٣٢	٤٣٣	٤٣٤	٤٣٥	٤٣٦	٤٣٧	٤٣٨	٤٣٩	٤٤٠	٤٤١	٤٤٢	٤٤٣	٤٤٤	٤٤٥	٤٤٦	٤٤٧	٤٤٨	٤٤٩	٤٥٠	٤٥١	٤٥٢	٤٥٣	٤٥٤	٤٥٥	٤٥٦	٤٥٧	٤٥٨	٤٥٩	٤٦٠	٤٦١	٤٦٢	٤٦٣	٤٦٤	٤٦٥	٤٦٦	٤٦٧	٤٦٨	٤٦٩	٤٧٠	٤٧١	٤٧٢	٤٧٣	٤٧٤	٤٧٥	٤٧٦	٤٧٧	٤٧٨	٤٧٩	٤٨٠	٤٨١	٤٨٢	٤٨٣	٤٨٤	٤٨٥	٤٨٦	٤٨٧	٤٨٨	٤٨٩	٤٩٠	٤٩١	٤٩٢	٤٩٣	٤٩٤	٤٩٥	٤٩٦	٤٩٧	٤٩٨	٤٩٩	٥٠٠	٥٠١	٥٠٢	٥٠٣	٥٠٤	٥٠٥	٥٠٦	٥٠٧	٥٠٨	٥٠٩	٥١٠	٥١١	٥١٢	٥١٣	٥١٤	٥١٥	٥١٦	٥١٧	٥١٨	٥١٩	٥٢٠	٥٢١	٥٢٢	٥٢٣	٥٢٤	٥٢٥	٥٢٦	٥٢٧	٥٢٨	٥٢٩	٥٣٠	٥٣١	٥٣٢	٥٣٣	٥٣٤	٥٣٥	٥٣٦	٥٣٧	٥٣٨	٥٣٩	٥٤٠	٥٤١	٥٤٢	٥٤٣	٥٤٤	٥٤٥	٥٤٦	٥٤٧	٥٤٨	٥٤٩	٥٥٠	٥٥١	٥٥٢	٥٥٣	٥٥٤	٥٥٥	٥٥٦	٥٥٧	٥٥٨	٥٥٩	٥٦٠	٥٦١	٥٦٢	٥٦٣	٥٦٤	٥٦٥	٥٦٦	٥٦٧	٥٦٨	٥٦٩	٥٧٠	٥٧١	٥٧٢	٥٧٣	٥٧٤	٥٧٥	٥٧٦	٥٧٧	٥٧٨	٥٧٩	٥٨٠	٥٨١	٥٨٢	٥٨٣	٥٨٤	٥٨٥	٥٨٦	٥٨٧	٥٨٨	٥٨٩	٥٩٠	٥٩١	٥٩٢	٥٩٣	٥٩٤	٥٩٥	٥٩٦	٥٩٧	٥٩٨	٥٩٩	٦٠٠	٦٠١	٦٠٢	٦٠٣	٦٠٤	٦٠٥	٦٠٦	٦٠٧	٦٠٨	٦٠٩	٦١٠	٦١١	٦١٢	٦١٣	٦١٤	٦١٥	٦١٦	٦١٧	٦١٨	٦١٩	٦٢٠	٦٢١	٦٢٢	٦٢٣	٦٢٤	٦٢٥	٦٢٦	٦٢٧	٦٢٨	٦٢٩	٦٣٠	٦٣١	٦٣
-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	----

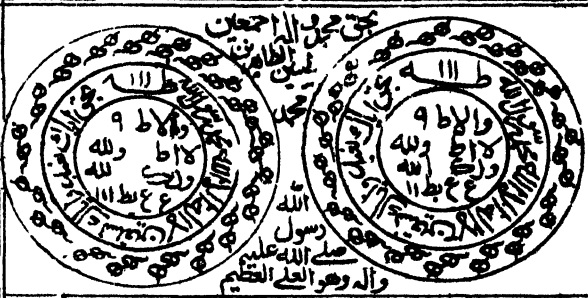
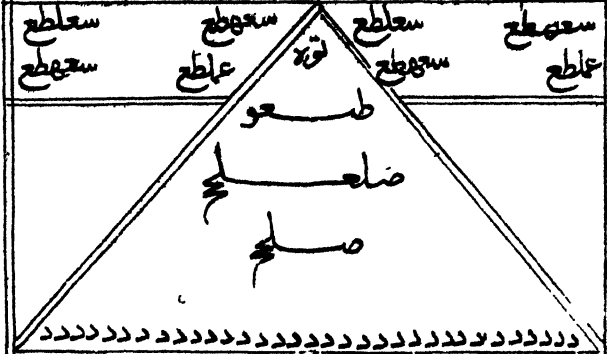
Y	VN	IV	99							P	29A	JO	49
C	A	B	C	D	E	F	G	H	I	J	K	L	M

یہاں پر ایک ایسی دوا ہے جو کہ یوں کہے میں کہ

[illegible][illegible]

87 0A V H R W A N K I S A V H O R S A V J U P B R " 11 P H S 27 H V L 111

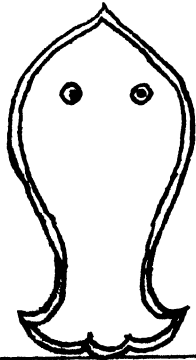
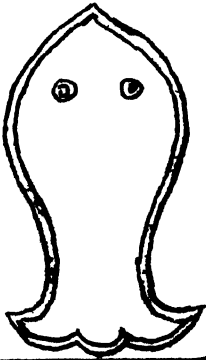
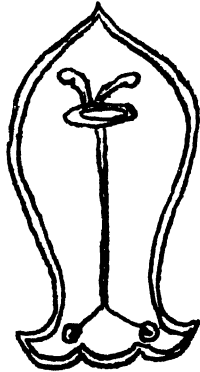
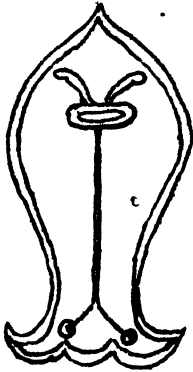
یہ شکل مبارک موسوم ہے شاہنائے رسول اللہ صلی اللہ علیہ
والہ وسلم کے اور فوائد بہت اور خواص بیشمار اسکے دیکھنے میں ہیں -



عاطح سعه طبع سعه طبع سعه طبع سعه طبع

نادعياً مظهر العجايب تجده عوناً لك في النوائب كل هم وعم
سيفجى بقوتك يا محمد بولائك يا علي يا علي يا علي

منقول ہے کہ جو کوئی اس صودت مبارکہ کو کہ مشابہ ہے فعل مبارک رسول خدا ص
 دیکھے پس گویا دوسنے ہزار نبیؑ آزاد کی راہ خدا میں اور ہزار دینار صدق کی اور ہزار
 حج کیا لایا یعنی جہدہ کران میںون عملوں کا ثواب ہوگا اسکے نام اعمال میں بیع ہوگا -



لا إله إلا أنت سبحانك

اسنو تسکیر ادا جاء نصر الله والفتح یہ نقش معظم واسطے محمدی
 کے اور مقہور ہونے دشمنوں کی منقول ہے علماء دین اور خلفاء راشدین
 دائرہ معصومین سے کہ جو کوئی سورہ اذ جاء نصر الله کو نقش مربع
 ۵۵ درہہ میں تسکیر کر کے لکھے اور اپنے پاس رکھے یا ہر بعد از تسکیر تبہ اس
 نقش معظم کو دیکھے بابرکت اس نقش کے روشنی آنکھ کی زیادہ ہو اور عوارض
 چشم کو دفع کرے گی اور نابینہم اور سپر حرام ہوگی اور نظر میں بادشاہوں اور
 بزرگوں کی نہایت شہرت ہوگا اور جس کام کو کرے گا کامی کو پہونچے گا اور جو کوئی
 اوکو دیکھا غرت و مہربانی سے پیش آدیکھا اور جس شخص کے پاس لکھا جائے

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

[illegible]

منقول ہے کہ جو کوئی کتبہ عد میں دُعا کی سیغی کی تین لکھے اور اپنے پاس رکھے اور ہر روز ایک مرتبہ دیکھے کوئی حربہ اور تیار لڑائی کا ادسپر کارگر نہ ہوگا اور ہمیشہ میدان لڑائی میں مظفر اور فتح مند رہے گا اور دیکھنے والا اس نقش بزرگ کا ساتھ عزت و حرمت کے بسر کریگا اور بڑے مرتبہ پر متکین ہوگا وہ نقش معظّم اور متبرک یہ ہے ۔

۱۹۱۴۶	۱۹۱۴۸۶	۱۹۱۴۸۶	۱۹۱۴۸۶
۱۹۱۴۸۶	۱۹۱۴۸۶	۱۹۱۴۸۶	۱۹۱۴۸۶
۱۹۱۴۸۶	۱۹۱۴۸۶	۱۹۱۴۸۶	۱۹۱۴۸۶
۱۹۱۴۸۶	۱۹۱۴۸۶	۱۹۱۴۸۶	۱۹۱۴۸۶

روایت میں وارد ہے حضرت سید المرسلین سے کہ جو کوئی اس نقش معظّم کو اپنے تمام عمر میں ایک مرتبہ بھی دیکھے خداوند عالم تمام گناہوں کے غفور فرماتا ہے اور حاجت دنیا کی بر لاتا ہے والسلام ۔ وہ نقش معظّم یہ ہے ۔

بسم اللہ الرحمن الرحیم

یا محمد	حدسہ طاوور
فرد	یا محمد مر
یا علی	حدسہ طاوور

منقول نرنگانِ دین اور علمائے اہل یقین سے کہ جو کوئی شخص اس ناوعلیٰ کو تکرار کرتے حج مریعہ مست و درشت کے نکلے اور اپنے پاس رکھے یا ہر روز ایک بار اُس کو دیکھے برکت اس نقشِ معظم کی تمام آفتوں ارضی و سماوی سے محفوظ رہے گا اور لڑائی میں سادہ فتح اور نصرت کے ہر لنگا اور نظر میں خلائق کی عزیز سوگاہ اور جو کوئی کس طرف اُس کے لشکار کریگا محترم رہے گا اور جو دعا کہ طلب کرے گا قبول ہوگی اور جادو وغیرہ اس پر اثر نہ کریگا

نقشِ معظم یہ ہے ۔

البركة من الله تعالى

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

[illegible]

فَيَقُولُ هَيْ هَيْ كَوْنِي مُكْمِلًا كَرَّمْتُكَ كَوْنِي مَرِجًا مَعْتُ دَعْفَتُكَ كَرَّمْتُكَ
 اور اپنے پاس رہے یا سر روز او کو ایک مرتبہ دینے پر در و گار عالم او کو
 قیامت کے دن ایک جام کو تر عطا فرمایا گیا اور نظر خلاق میں پسند
 ہوگا اور روزی او کے زیادہ ہوگی اور کسی طرف محتاج نہ ہوگا اور جس
 کہ میں کہ یہ نقش رہے گا اس گہر کی لوگ تنگی آب سے محفوظ
 ہیں گے اور آفت آتش سے محفوظ رہیں گے وہ نقش معظم
 یہ ہے -

سَمِيحٌ	رَحِيمٌ	كَرِيمٌ	عَظِيمٌ	رَافِعٌ	فَضْلٌ
خَبِيرٌ	رَحِيمٌ	كَرِيمٌ	عَظِيمٌ	رَافِعٌ	فَضْلٌ
كَرِيمٌ	رَحِيمٌ	كَرِيمٌ	عَظِيمٌ	رَافِعٌ	فَضْلٌ
كَرِيمٌ	رَحِيمٌ	كَرِيمٌ	عَظِيمٌ	رَافِعٌ	فَضْلٌ
عَظِيمٌ	رَحِيمٌ	كَرِيمٌ	عَظِيمٌ	رَافِعٌ	فَضْلٌ
رَافِعٌ	فَضْلٌ	عَظِيمٌ	رَحِيمٌ	كَرِيمٌ	عَظِيمٌ
فَضْلٌ	عَظِيمٌ	رَحِيمٌ	كَرِيمٌ	عَظِيمٌ	رَافِعٌ
عَظِيمٌ	رَحِيمٌ	كَرِيمٌ	عَظِيمٌ	رَافِعٌ	فَضْلٌ

جو کوئی اس نقش اول کو روزِ شنبہ
 دیکھے تمام آفتون ابدان سے دور
 شنبہ تک حفاظت پروردگارِ عالم
 میں محفوظ رہے گا اور سامنے پادشاہوں کا
 اور زرگون کی ماتہ عزت کے ریسگا اور
 خوار و سرنگاہ کرے گا دوست اور دشمن ہوگا اور
 مرگ نہایت آسان اور آغوش سے محفوظ رہے گا

روزِ شنبہ	روزِ جمعہ	روزِ پنجشنبہ	روزِ چارشنبہ	روزِ بدھ	روزِ بدھ
۱۷۳	۷	۱۲	۶	۱۷	۷
۶	۷۵	۱۷	۱۹	۱۷	۱۷
۱۸	۱۴	۵	۴	۱۷	۱۷
لا	لا	لا	لا	لا	لا

جو کوئی اس نقشِ تیسرے کو روزِ شنبہ کے
 روز دیکھے انواع و اقسام کے آفتون اور
 بلاؤں سے اور دشمنوں سے محفوظ
 رہے گا اور جو اس کو دیکھے دوست اور
 ہوگا اور جو دعائے گناہ متیاب ہوگی

روزِ شنبہ	روزِ جمعہ	روزِ پنجشنبہ	روزِ چارشنبہ	روزِ بدھ	روزِ بدھ
۱	۱۸۱	۸	۷	۱۵	۱۵
۸	۴	۷	۱۷۳	۵۵	۵۵
۶	۱۴	۲۷۲	۸۶	۸۶	۸۶
۶۲	۱۸	۳۶	۱۷۳	۷۱	۷۱
لا	لا	لا	لا	لا	لا

جو کوئی اس نقشِ دوسرے کو روزِ شنبہ
 دیکھے آتش و دوزخ سے نجات پائے گا اور
 تمام کام دنیا کے اوسپرسان ہونگے جو
 یکشنبہ تک صحیح حفاظت پروردگار کے رکھے گا
 اور نظر میں پادشاہوں اور زرگون کی
 حرمت کے ساتھ رہے گا وہ نقشِ
 مکرم یہ ہے

روزِ شنبہ	روزِ جمعہ	روزِ پنجشنبہ	روزِ چارشنبہ	روزِ بدھ	روزِ بدھ
۱	۱۱۶	۱۷	۲	۵۹۵	۵۹۵
۸۷	۷	۲	۱۹۲	۵۵۵	۵۵۵
۴	۱۷	۱۷	۱۷	۱۷	۱۷
۱۹۲	۵	۵	۱۴	۱۸	۱۸
لا	لا	لا	لا	لا	لا

جو کوئی اس نقشِ چوتھے کو روزِ شنبہ کے
 دن دیکھے تمام بلاؤں اور آفتون سے
 دور رہے گا شنبہ تک پناہ پروردگار
 میں رہے گا اور گناہ مغفیر اور کثیرہ اور
 حق سے محفوظ رہے گا اور جو دعائے گناہ قبول ہوگی

روزِ شنبہ	روزِ جمعہ	روزِ پنجشنبہ	روزِ چارشنبہ	روزِ بدھ	روزِ بدھ
۱	۱۸	۸۷	۸۶	۱۷	۱۷
۵۸	۷	۲۶	۷	۲	۲
۲۲	۲۲	۱	۲	۵۶۳	۵۶۳
۲۹	۵۵	۱۴	۵	۲۴	۲۴
لا	لا	لا	لا	لا	لا

جو شخص اس نقش پانچون کو روزین
چہار شنبہ دیکھے تمام بلاؤں اور آفتوں
اور بیماریوں سے اسے ہینے میں محفوظ
رہے گا اور سچ نظر نہ رکھوں اور
بادشاہوں اور امیروں کی باحوت
وغرت رہے گا وہ نقش یہ ہے

یا اللہ یا قاض یا اللہ یا ادریس یا زکریا

۱۱ ۷۱ ۸۸۸ ۱۱۸ ۹۸

۱۸ ۱۸ ۷ ۳ ۳

ع ۶ ۲۱ ۲۸۲ ۳

لا الہ الا اللہ محمد رسول اللہ

جو کوئی اس نقش ساتون کو جو کہ
میں دیکھے اس دن سے تمام
وہمیں دوست اس کے ہوں اور جو
گناہ صغیرہ و کبیرہ کے اس سے ہفتہ میں
یا ہر حق تعالیٰ اپنی رحمت سے بخش دیتا

ملیقا ملیقا انت تعلم ما فی قلوبہم ملیقا

۱ ۲۱ ع ۱۸

۲ ۵۷ ۱۲ ۱۳

۸۲ ۱۵ ۵۴ ۳

۵۲۵ ۵۲ ۱۳۵ محمد یا ای

لا الہ الا اللہ محمد رسول اللہ

جو کہ اس نقش چھی کو شنبہ کے دن
دیکھے تمام بلاؤں کے نظر میں غریزہ
اور دولت غیب سے پاوے اور
تمام آفتوں اور بلاؤں سے اور بیماریوں
حمایت میں حق سہارا قائلے کے رہے
وہ نقش معظم یہ ہے

یا ادریس یا ادریس یا اللہ یا قاض یا ادریس

۱ ۲۲ ۵۵ ۷۱ ۲۲

۲۱ ۷ ۱۳ ۳ ۲۲

ع ۷ ۱۳ ۳ ۳

لا الہ الا اللہ محمد رسول اللہ

جو شخص اس نقش معظم کو ہر روز ناکتہ
دیکھے اگر ہو سکے ہر ماہ میں ایک مرتبہ دیکھے
اور اگر یہ ہی نہ ہو سکے ہر سال میں ایک مرتبہ
دیکھے اور نہ ہی نہ ہو سکے تمام عمر میں
ایک بار دیکھے خداوند کریم سب گناہوں سے

۱۸۱۸ ۴۱۱ ۴۱۱ ۲۲۱ ۱۸۱۲

۴۸ ۱۱۵۴ ۱۲۲۲ ۱۲۲۱

۱۷۱۱ ۹۱۱ ۶۳۱ ۷۲۶۱ ۱۹ ع

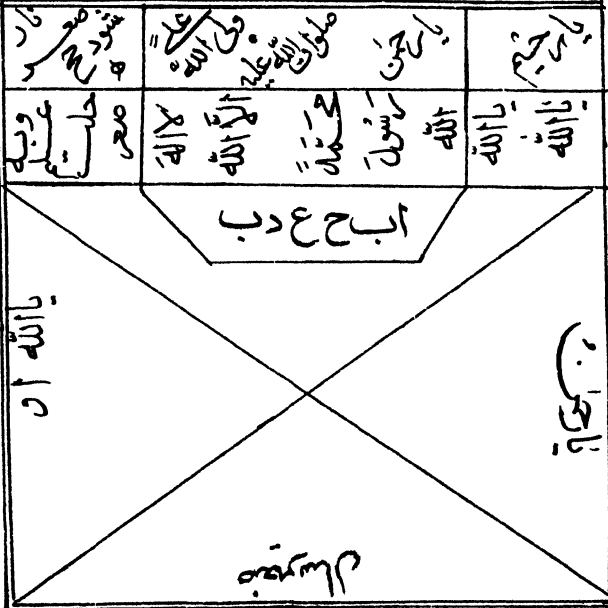
۹۱۹ ۵۱۱۹ ۵۱۱۹ ۸ ۱۱۱۹

۱۵۱۵ ۱۱۱۱ ۱۱۱۱ ۱۱۱۱ ۱۵۱۵

۱۵۱۵ ۱۱۱۱ ۱۱۱۱ ۱۱۱۱ ۱۵۱۵

اور آئینہ صوفی ہے اور گویا حضرت کی زیارت سے شرف ہوا

منقول ہے کہ جو کوئی اس نقشِ مکرم کو بعد نماز چھکانے کے دیکھے تمام بلائیں اور آفتوں
 دنیا سے حفاظت میں پروردگارِ عالم کے رہنے کا اور کلامِ اوستا کا سکنازدہ ایک باوثاق
 اور بزرگوں کے مقبول ہونکا اور سحر و کبر سے بے خوف رہنے کا اور دشمن اور کھا
 ہمیشہ مقبور رہنے کا اور اگر کوئی شخص قرضدار ہو شب بچش نہ یا شب جمعہ کے
 اس نقشِ معظم کو تنفیج اپنا کرے قرضداری سے نجات پائے گا اور اگر لکھ کر
 اپنے پاس رکھے بیچ لڑائی کے فتنہ نہ ہوگا۔ والسلام
 فقط



منقول ہے خاتم المجتہدین شیخ بھاول الدین محمد عالمی رضوان اللہ علیہ
سے کہ جو کوئی تمام عمر اپنے ایک مرتبہ اس شکل کو دیکھے گا آگ و دوزخ کی
ادسیر حرام ہوگی اور جو ہر روز طرف اس شکل کرم کے نگاہ کرے گا تمام
عمر خراج غلطی نہ ہوگا والسلام۔ وہ نقش معظم و کرم یہ ہے۔



منقول ہے کہ جو کوئی ہر روز پانچ مرتبہ بعد از اذان نماز پنجگانہ کے اس شکل
کو دیکھے تمام حاجتیں اوسکے برآوینگی۔ وہ نقش معظم و کرم یہ ہے



منقول ہے کہ ہر صبح کو جو کوئی اس شکل مبارک کو دیکھے خداوند عالم اوسکو
زیادہ غایت کریگا اور تمام گناہ اوسکے بخشے گا۔ وہ شکل مبارک یہی

و

ب ب

ص

د

سال

رو

سال

لا

جاء

بی بی

56

منقول ہے کہ جو کوئی سورہ فلق کو تکریر کرے سچ مریخ جودہ
جودہ کے لئے اور اپنی پاس رکھے تمام آفتون اور بلاؤں سے
حفاظت پرمندگار عالم میں رہے گا اور اگر چاند کو تکریر اس نقش
مکرم کو نگاہ کرے تو تمام ہمدیہ خوشی و خوشی بکھری جائے گا اور تمام
آفتون دنیا اور ملک اور مرگ و مفاجات اور طاعون سے محفوظ
رہے گا اور لڑائی میں دشمن پر فتیاب ہوگا اور گزند دیوار اور
پری سے محفوظ رہے گا واللہ اعلم بالصواب -

وَالْمُتَرَاتِبُ وَفِيهِ

[illegible]

منقول ہے کہ جو کوئی سورۃ قدر کو نکل کر کر کے صبح مرغ میں پڑھ دے درندہ
کے لگے اور اس نے رکھے ثواب بہتر شب نما مثل شب قدر
کے حاصل ہوگا اور اگر صبح کی اور سپر حرام ہوگی اور بہتر گزرتا محتاج
طرف خلق کے ہوگا اور گزند دیو و پری اور جن اور شیطان سے
برج حفاظت کے رہے گا اور جس لڑائی پر جادو سے گا
تو اتھ فتح ہدی کے اپنے مکان پر آدے گا۔ وہ نقش
مغظم یہ ہے۔

فَرَأَيْتَ النَّاسَ يَكَدُ خَلُوكَ فِي دِينِ اللَّهِ أَفْوَاجًا

[illegible]

منقول ہے کہ جو کوئی اس نقش مبارک کو بعد نماز صبح نگاہ کرے اس سے کہ گویا
 اونے سائیدہ حج کے مانند حج حضرت آدم علیہ السلام کے اور اگر بعد نماز ظہر کے
 دیکھے تو گویا تین سو حج مانند حضرت ابراہیم علیہ السلام کے ادا کئے اور اگر
 بعد نماز عصر کے نگاہ کرے تو گویا ہزار حج مانند حج حضرت یونس علیہ السلام
 کے عمل میں لایا اور اگر بعد نماز مغرب کے نگاہ کرے تو گویا ہزار حج مانند
 حج حضرت محمد مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے بجا لایا اور اگر بعد نماز
 عشا کے نگاہ کرے ایسا ہے کہ گویا اونے ہزار بندے راہ خدا
 میں آزاد کئے وہ نقش معظم یہ ہے -

x

	ای الی اح در مذ سال	
	یا ارحمن علی ولی اللہ علی اللہ وسلم فی اللہ	یا اللہ یا اللہ لا الہ الا اللہ محمد رسول اللہ
	السمیع سہ مذ سال	

مِنْ أَمْرِ اللَّهِ أَنْ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

سروی ہے حضرت رسالت نبیہ صلی اللہ علیہ والہ سے کہ
فرمایا حضرت نے جبرئیلؑ سے کہ جو کوئی تکبیر کہے آیت ملک کے ستین حج
مہر کے لکھے اور اپنے تیس رکھے یا ہر روز اسکو ایک مرتبہ دیکھے
نظر میں بادشاہوں اور امیروں اور بزرگوں کے عزیز ہوگا اور تمام
عالم اسکا مطیع و فرمان بردار ہوگا اور تمام غم ساقیہ خوشی اور
خرمی سے بھر کر لگیا اور کوئی آفت و بلا اس کے قریب نہ
آوے گی۔ وہ نقش یہ ہے۔

لا إله إلا الله محمد رسول الله صلى الله عليه وسلم

A large grid of 100 squares, each containing a different Arabic calligraphic symbol or character, likely representing the 100 names of Allah. The symbols are arranged in a 10x10 grid. The characters are highly stylized and vary significantly in shape and complexity, ranging from simple geometric forms to intricate, flowing script elements. The grid is framed by a double-line border.

منقول ہے جاب شیخ سہا والدین معالی سے کہ جو شخص تمام عمر من اپنے ایک طرف اس شکل معظم کے نگاہ کرے حق تعالیٰ آگ دفع کی اور سیر حرام کرتا ہے اور قیامت کے دن ناسرمل اور کے دہنے ساتھ من غایت ہوگا اور دنیا میں محتاج خلق نہ ہوگا

مح	مح	مح	مح	مح	مح
مح	مح	مح	مح	مح	مح

منقول ہے کہ جو کوئی فیوض ایک دفعہ طرف اس شکل کے نگاہ کرے ساتھ رکت اس شکل محترم کی آگ دفع کی نہ دیکھیں گے اور اگر پہلے اول وقت مذکر کے نگاہ کرے تو تمام دن ساتھ خوشی کے گزرے گا اور جو کوئی اول ماہ کے اس نقش محترم کو ملاحظہ کرے تو تمام ماہ ساتھ خوشی کے گزرے گا والسلام۔

بہند معتبر روایت ہے کہ جو کوئی ہر صبح کو اس نقش مبارک کو دیکھے تمام آفات ماضی و ماضی سے حفاظت حافظ حقیقی کے رہے گا وہ نقش مبارک یہ ہے۔

۱	۱۵	۱۴	۴	مح	مح	مح	مح	مح
۱۲	۶	۷	۹	مح	مح	مح	مح	مح
۸	۱۰	۱۱	۱۵	مح	مح	مح	مح	مح
۱۴	۳	۲	۱۳	مح	مح	مح	مح	مح

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ				
٢١١٦	٣٤١	٨٩ م من	٥٧٠	٢١١٦
٢١٢	٨٤	١٢٢	١١٥٤	٢١١٦
٢١٣	٨٤	٢١٢	١١	٢١١٦
٢١٤	٨٤	٢١٢	١١	٢١١٦
٢١٥	٢١٢	٢١٢	١١	٢١١٦
٢١٦	٢١٢	٢١٢	١١	٢١١٦
٢١٧	٢١٢	٢١٢	١١	٢١١٦
٢١٨	٢١٢	٢١٢	١١	٢١١٦
٢١٩	٢١٢	٢١٢	١١	٢١١٦
٢٢٠	٢١٢	٢١٢	١١	٢١١٦

مردی ہے کہ علی ابن موسی الرضا علیہ السلام سے کہ جو کوئی اس نقش مبارک کو ایک مرتبہ دیکھے بہ برکت اس نقش کے سونہر گناہ اس بندہ کے حق بن جائے گا۔ یہ بتایا ہے اور جو بیمار ہوشیاری حقیقی کامل شفاء عطا فرماتا ہے

۷۱۱۸	۳۸۱	۱۳۲۱	۷۱۱۲	۷۱۱۸
۱۱۵۵	۱۲۲۲	۱۳۲۱	۷۱۱۲	۷۱۱۸
۱۱۲۲	۶۳۴	۶۱۹	۷۱۱۲	۷۱۱۸
۸۱۴	۱۱۱۹	۲۲۱۲	۷۱۱۲	۷۱۱۸
۱۵۱	۲۱۳۱	۱۱۲۱	۷۱۱۲	۷۱۱۸

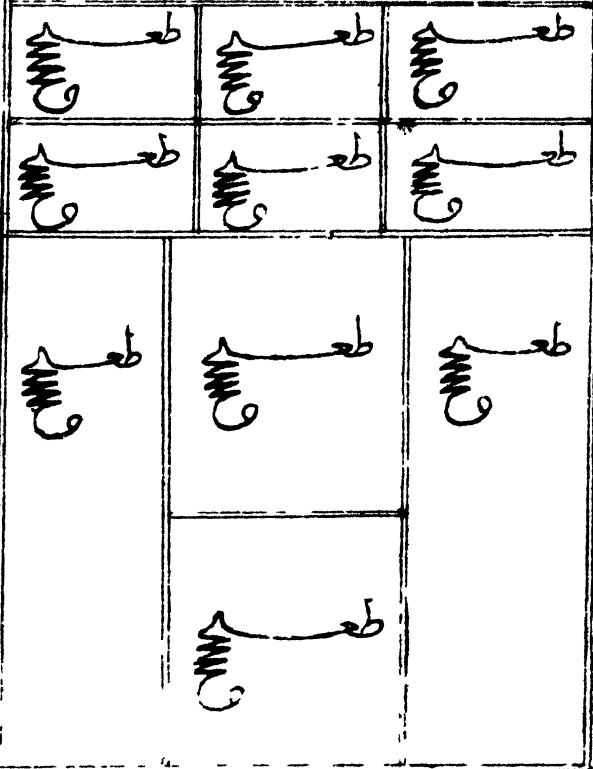
اور بعض سخن میں جو اس بسیار اور فوائد شمار اس شکل کے دیکھنے کے واسطے کہو ہیں

سَيِّطُوعُ النُّورِ				
رسول	اللہ	عز و جل	اللہ	محمد
۶	۹	۸	۱۱۲	۸
۶	۶	۶	۸	۹
۶	۶	۶	۸	۹
۶	۶	۶	۸	۹
۶	۶	۶	۸	۹

روایت میں وارد ہوا ہے امیر المؤمنین علیہ السلام سے کہ جو کوئی
اس نقش کو دیکھے ایک مرتبہ تو ستر برس کے گناہ خدراے
کریم اوسکے بخدیتا ہے وہ نقش معظّم یہ ہے ۔

یا اللہ	یا اللہ	یا اللہ	یا اللہ	یا اللہ
سرب	مرہب	دس	اللہ	اللہ
ورہنہ	ماد	وب	اللہ	اللہ
لاہر	باد	سرب	اللہ	اللہ
یا اللہ	یا اللہ	یا اللہ	یا اللہ	یا اللہ

منقول ہے کہ جو کوئی صبح دشام اس اسموں کے طرف دیکھے حفاظت
 میں پروردگار عالم کے رب سے کا ادا کر جائیں روز صبح کو برابر دیکھے تو
 عجائب و غرائب مشاہدہ کرے گا وہ
 نقص یہ ہے



موسیٰ ہے کہ جو شخص اس نقش کو ہر روز ایک مرتبہ دیکھے یا تمام عمر
 من اکیار دیکھے خداوند عالم اس کے گناہ بخش دیتا ہے اور عمر
 اس کی مدد کرتا ہے اور روزی اس کی کشادہ کرتا ہے اور چاہے کہ
 دیکھنے والا اس نقش کا با وضو ہو ۔ وہ نقش مبارک یہ ہے
 والسلام

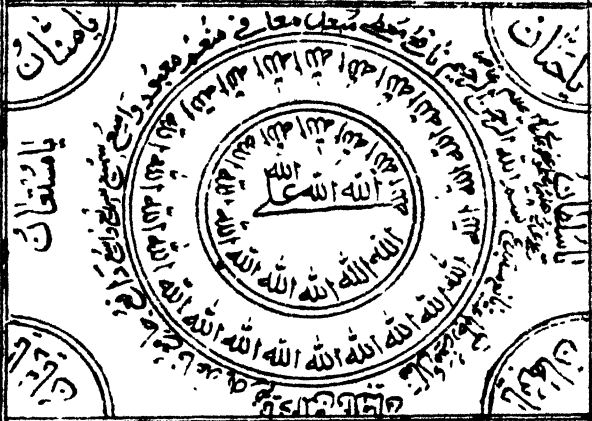
لا الہ الا اللہ	لا الہ الا اللہ	محمد	رسول	اللہ
۷۱	۱۸	۲۲ ۵۴۲	۲۲ ۵۲۲	۱۱
۲۴۳	۸۷	۸۷	۲۲۳	۳
۸۲	۸	۷۷	۷	۳۷
یا فتاح	ص			
یا اللہ	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ			
یا کویم	۱۱ ۱۱ ۱۱ ع ذار و ن ع م ر			
یا اللہ	بِراء د ص ب و د ر ع مطاع			
یا غفور	یا رحیم			
یا غفور	یا غفور	یا غفور	یا غفور	یا اللہ

انقول ہے امیر المؤمنین سے ایک دن جناب رسول خدا
سجد میں تشریف فرما تھے اتنے میں جب رمل حکم رب جلیل
بناب یہ المرسلین پر نازل ہوئے اور عرض کیا کہ یا
رسول اللہ حق تعالیٰ نے بعد تحفہ سلام کے ارشاد فرمایا ہے کہ جو
کوئی سورۃ حمد مجھ پر پڑھے کہ یکے اور اپنے پاس رکھے یا
ایک مرتبہ ہر روز پڑھے اگر عمر ادا کرے انتہا کو پہنچی ہو تو
خدا اکیس برس عباد کے زیادہ کرتا ہے وہ یہ ہے

لا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَآلِهِ

This image shows a 10x10 grid of 100 squares, each containing a single character from the Arabic alphabet. The characters are arranged in a systematic pattern, likely representing a cipher or a specific dialect of Arabic script. The grid is organized into 10 rows and 10 columns, with each square containing a unique character or a variation of a common character. The characters are written in a stylized, cursive script, typical of historical Arabic manuscripts. The overall layout suggests a structured arrangement of the alphabet, possibly for cryptographic purposes or as a reference for a specific dialect.

کہ اعلیٰ اسم الشون بین شیخ ابو عبد اللہ جانی نے نقل کیا ہے کہ جو کوئی سرور
ششم مرتبہ اس شکل کے نماہ کرے اور وقت دیکھتے کے آت اگر کسی ایک مرتبہ
پڑھے خداوند عالم او کو معزز و کرم کرتا ہے اور اگر کوئی اس شکل کو لکھ کر اپنے
پاس رکھے خداوند عالم اس کو شریکوں سے اور دشمنوں سے اور
بیاریوں سے محفوظ رکھتا ہے وہ یہ ہے ۔



روایت ہے حضرت امیر المومنین علیہ السلام سے کہ مغرب نے فرمایا کہ جو کوئی جائد و بحکم کفر
اس شکل کے نماہ کرے وہ ہمیدہ او سیر مبارک توتائے اور ساتھ موت اور سلامتی
وہ ہمیدہ او سیر کند تائے پس چاہے کہ جب اس نقش کو دیکھے تو مرتبہ سہ ہاتھ اور
میں مرتبہ دودجا لاکر حاجت اپنی طلب کرے خداوند عالم حاجت او کی قبول کرے گا ۔

لا الہ الا	لا	الله	تجدد	ارسل الله
۱۲۲	۱۲۲	۱۲۲	۱۱۲	۱۲۲
۱۵	۷۸	۷	۳۲۲۷۱	۲۵۰
۲۵۱	۷۸	۷۸	۱۷۸	۱۱
۱۳	۷۱	۱۲۱	۳۱۵	۵۱

منقول ہے کہ جو کوئی شخص ہر روز بعد نماز پنجگانہ کے اس نقشِ معظم کو دیکھے خداوندِ عالم ساتھ برکت اس نقش کے گناہ او کے عفو فرماتا ہے اور ساتھ رحمت کے او سے داخل بہشت ہو کر گیا وہ نقشِ معظم و کرم یہ ہے

60

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

نقل ہے شیخ بابا الدین عالمی سے کہ جو کوئی تمام عمر میں ایک مرتبہ اس نقش کو دیکھے آگ و دھبہ کی اور سحر جہاں ہوگی اور اگر ہر روز ایک مرتبہ دیکھے فلاح
طرف سے ہوگا اور اگر دقت دیکھنے ماہ نو کے اس شکل مبارک کو دیکھے
تو وہ بہت خوشی سے گزرے گا۔ وہ نقش مبارک ہے۔

3

١٠

3

3



செய்த



اِذَا جَاءَ ضَرْبُ اللَّهِ وَالْفَرَجُ

منقول ہے کہ جو کون سوہ کافرین کو سرخ شانزدہ در
 شانزدہ کے کئے اور اپنے پاس کے یا سبز روز او سکود بھیجے
 انکرتہ ذاب جہاد کا او سکوا حاصل ہوتا ہے اور وسوسہ
 شیطانی سے محفوظ رہتا ہے اور جو حاجت درگاہ حق تعالیٰ
 سے طلب کریگا خداوند عالم قبول کرے گا وہ نفس پر ہے

انہ کا قتل

مَا كَانَ يَكْنُحُونَ فِي دِينِ اللَّهِ إِذَا حَا ضَمَّ بِكُلِّ رَيْتِكَ وَاسْتَغْفِرُ

[illegible]

أَفَلَمْ يَرْزُقْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَظَنُونَ

منقول ہے کہ جو کوئی آیۃ الکرسی کو تکبیر کر کے سر پہ پانزوا
در پانزوا کے پکے اور اپنے پاس رکھے یا ہر روز ایک مرتبہ
اداسکو دیکھے تو گویا ثواب جہاد کا اسکو حاصل ہوگا اور
وسوسہ شیطان سے محفوظ رہے گا اور جو حاجت کہ
خدا تعالیٰ سے طلب کرے گا فوراً وہ حاجت برآ ہوگی وہ یہی

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَجَعَلْنَا مِنْكُمْ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَى وَعِيسَى أَنْ يَكُونَ مِنْ السَّالِفِينَ

[illegible]

اور دیگر نسخہ میں مکر ایہ مذکور نیست در بیت اسی حضرت سے منقول ہے اور
قوائد ہی اسطرح مذکور ہیں -

۱	۲	۳	۴	۵	۶	۷	۸	۹	۱۰	۱۱	۱۲	۱۳	۱۴	۱۵	۱۶	۱۷	۱۸	۱۹	۲۰	۲۱	۲۲	۲۳	۲۴	۲۵	۲۶	۲۷	۲۸	۲۹	۳۰	۳۱	۳۲	۳۳	۳۴	۳۵	۳۶	۳۷	۳۸	۳۹	۴۰	۴۱	۴۲	۴۳	۴۴	۴۵	۴۶	۴۷	۴۸	۴۹	۵۰	۵۱	۵۲	۵۳	۵۴	۵۵	۵۶	۵۷	۵۸	۵۹	۶۰	۶۱	۶۲	۶۳	۶۴	۶۵	۶۶	۶۷	۶۸	۶۹	۷۰	۷۱	۷۲	۷۳	۷۴	۷۵	۷۶	۷۷	۷۸	۷۹	۸۰	۸۱	۸۲	۸۳	۸۴	۸۵	۸۶	۸۷	۸۸	۸۹	۹۰	۹۱	۹۲	۹۳	۹۴	۹۵	۹۶	۹۷	۹۸	۹۹	۱۰۰
۱۰۱	۱۰۲	۱۰۳	۱۰۴	۱۰۵	۱۰۶	۱۰۷	۱۰۸	۱۰۹	۱۱۰	۱۱۱	۱۱۲	۱۱۳	۱۱۴	۱۱۵	۱۱۶	۱۱۷	۱۱۸	۱۱۹	۱۲۰	۱۲۱	۱۲۲	۱۲۳	۱۲۴	۱۲۵	۱۲۶	۱۲۷	۱۲۸	۱۲۹	۱۳۰	۱۳۱	۱۳۲	۱۳۳	۱۳۴	۱۳۵	۱۳۶	۱۳۷	۱۳۸	۱۳۹	۱۴۰	۱۴۱	۱۴۲	۱۴۳	۱۴۴	۱۴۵	۱۴۶	۱۴۷	۱۴۸	۱۴۹	۱۵۰	۱۵۱	۱۵۲	۱۵۳	۱۵۴	۱۵۵	۱۵۶	۱۵۷	۱۵۸	۱۵۹	۱۶۰	۱۶۱	۱۶۲	۱۶۳	۱۶۴	۱۶۵	۱۶۶	۱۶۷	۱۶۸	۱۶۹	۱۷۰	۱۷۱	۱۷۲	۱۷۳	۱۷۴	۱۷۵	۱۷۶	۱۷۷	۱۷۸	۱۷۹	۱۸۰	۱۸۱	۱۸۲	۱۸۳	۱۸۴	۱۸۵	۱۸۶	۱۸۷	۱۸۸	۱۸۹	۱۹۰	۱۹۱	۱۹۲	۱۹۳	۱۹۴	۱۹۵	۱۹۶	۱۹۷	۱۹۸	۱۹۹	۲۰۰
۲۰۱	۲۰۲	۲۰۳	۲۰۴	۲۰۵	۲۰۶	۲۰۷	۲۰۸	۲۰۹	۲۱۰	۲۱۱	۲۱۲	۲۱۳	۲۱۴	۲۱۵	۲۱۶	۲۱۷	۲۱۸	۲۱۹	۲۲۰	۲۲۱	۲۲۲	۲۲۳	۲۲۴	۲۲۵	۲۲۶	۲۲۷	۲۲۸	۲۲۹	۲۳۰	۲۳۱	۲۳۲	۲۳۳	۲۳۴	۲۳۵	۲۳۶	۲۳۷	۲۳۸	۲۳۹	۲۴۰	۲۴۱	۲۴۲	۲۴۳	۲۴۴	۲۴۵	۲۴۶	۲۴۷	۲۴۸	۲۴۹	۲۵۰	۲۵۱	۲۵۲	۲۵۳	۲۵۴	۲۵۵	۲۵۶	۲۵۷	۲۵۸	۲۵۹	۲۶۰	۲۶۱	۲۶۲	۲۶۳	۲۶۴	۲۶۵	۲۶۶	۲۶۷	۲۶۸	۲۶۹	۲۷۰	۲۷۱	۲۷۲	۲۷۳	۲۷۴	۲۷۵	۲۷۶	۲۷۷	۲۷۸	۲۷۹	۲۸۰	۲۸۱	۲۸۲	۲۸۳	۲۸۴	۲۸۵	۲۸۶	۲۸۷	۲۸۸	۲۸۹	۲۹۰	۲۹۱	۲۹۲	۲۹۳	۲۹۴	۲۹۵	۲۹۶	۲۹۷	۲۹۸	۲۹۹	۳۰۰
۳۰۱	۳۰۲	۳۰۳	۳۰۴	۳۰۵	۳۰۶	۳۰۷	۳۰۸	۳۰۹	۳۱۰	۳۱۱	۳۱۲	۳۱۳	۳۱۴	۳۱۵	۳۱۶	۳۱۷	۳۱۸	۳۱۹	۳۲۰	۳۲۱	۳۲۲	۳۲۳	۳۲۴	۳۲۵	۳۲۶	۳۲۷	۳۲۸	۳۲۹	۳۳۰	۳۳۱	۳۳۲	۳۳۳	۳۳۴	۳۳۵	۳۳۶	۳۳۷	۳۳۸	۳۳۹	۳۴۰	۳۴۱	۳۴۲	۳۴۳	۳۴۴	۳۴۵	۳۴۶	۳۴۷	۳۴۸	۳۴۹	۳۵۰	۳۵۱	۳۵۲	۳۵۳	۳۵۴	۳۵۵	۳۵۶	۳۵۷	۳۵۸	۳۵۹	۳۶۰	۳۶۱	۳۶۲	۳۶۳	۳۶۴	۳۶۵	۳۶۶	۳۶۷	۳۶۸	۳۶۹	۳۷۰	۳۷۱	۳۷۲	۳۷۳	۳۷۴	۳۷۵	۳۷۶	۳۷۷	۳۷۸	۳۷۹	۳۸۰	۳۸۱	۳۸۲	۳۸۳	۳۸۴	۳۸۵	۳۸۶	۳۸۷	۳۸۸	۳۸۹	۳۹۰	۳۹۱	۳۹۲	۳۹۳	۳۹۴	۳۹۵	۳۹۶	۳۹۷	۳۹۸	۳۹۹	۴۰۰
۴۰۱	۴۰۲	۴۰۳	۴۰۴	۴۰۵	۴۰۶	۴۰۷	۴۰۸	۴۰۹	۴۱۰	۴۱۱	۴۱۲	۴۱۳	۴۱۴	۴۱۵	۴۱۶	۴۱۷	۴۱۸	۴۱۹	۴۲۰	۴۲۱	۴۲۲	۴۲۳	۴۲۴	۴۲۵	۴۲۶	۴۲۷	۴۲۸	۴۲۹	۴۳۰	۴۳۱	۴۳۲	۴۳۳	۴۳۴	۴۳۵	۴۳۶	۴۳۷	۴۳۸	۴۳۹	۴۴۰	۴۴۱	۴۴۲	۴۴۳	۴۴۴	۴۴۵	۴۴۶	۴۴۷	۴۴۸	۴۴۹	۴۵۰	۴۵۱	۴۵۲	۴۵۳	۴۵۴	۴۵۵	۴۵۶	۴۵۷	۴۵۸	۴۵۹	۴۶۰	۴۶۱	۴۶۲	۴۶۳	۴۶۴	۴۶۵	۴۶۶	۴۶۷	۴۶۸	۴۶۹	۴۷۰	۴۷۱	۴۷۲	۴۷۳	۴۷۴	۴۷۵	۴۷۶	۴۷۷	۴۷۸	۴۷۹	۴۸۰	۴۸۱	۴۸۲	۴۸۳	۴۸۴	۴۸۵	۴۸۶	۴۸۷	۴۸۸	۴۸۹	۴۹۰	۴۹۱	۴۹۲	۴۹۳	۴۹۴	۴۹۵	۴۹۶	۴۹۷	۴۹۸	۴۹۹	۵۰۰
۵۰۱	۵۰۲	۵۰۳	۵۰۴	۵۰۵	۵۰۶	۵۰۷	۵۰۸	۵۰۹	۵۱۰	۵۱۱	۵۱۲	۵۱۳	۵۱۴	۵۱۵	۵۱۶	۵۱۷	۵۱۸	۵۱۹	۵۲۰	۵۲۱	۵۲۲	۵۲۳	۵۲۴	۵۲۵	۵۲۶	۵۲۷	۵۲۸	۵۲۹	۵۳۰	۵۳۱	۵۳۲	۵۳۳	۵۳۴	۵۳۵	۵۳۶	۵۳۷	۵۳۸	۵۳۹	۵۴۰	۵۴۱	۵۴۲	۵۴۳	۵۴۴	۵۴۵	۵۴۶	۵۴۷	۵۴۸	۵۴۹	۵۵۰	۵۵۱	۵۵۲	۵۵۳	۵۵۴	۵۵۵	۵۵۶	۵۵۷	۵۵۸	۵۵۹	۵۶۰	۵۶۱	۵۶۲	۵۶۳	۵۶۴	۵۶۵	۵۶۶	۵۶۷	۵۶۸	۵۶۹	۵۷۰	۵۷۱	۵۷۲	۵۷۳	۵۷۴	۵۷۵	۵۷۶	۵۷۷	۵۷۸	۵۷۹	۵۸۰	۵۸۱	۵۸۲	۵۸۳	۵۸۴	۵۸۵	۵۸۶	۵۸۷	۵۸۸	۵۸۹	۵۹۰	۵۹۱	۵۹۲	۵۹۳	۵۹۴	۵۹۵	۵۹۶	۵۹۷	۵۹۸	۵۹۹	۶۰۰
۶۰۱	۶۰۲	۶۰۳	۶۰۴	۶۰۵	۶۰۶	۶۰۷	۶۰۸	۶۰۹	۶۱۰	۶۱۱	۶۱۲	۶۱۳	۶۱۴	۶۱۵	۶۱۶	۶۱۷	۶۱۸	۶۱۹	۶۲۰	۶۲۱	۶۲۲	۶۲۳	۶۲۴	۶۲۵	۶۲۶	۶۲۷	۶۲۸	۶۲۹	۶۳۰	۶۳۱	۶۳۲	۶۳۳	۶۳۴	۶۳۵	۶۳۶	۶۳۷	۶۳۸	۶۳۹	۶۴۰	۶۴۱	۶۴۲	۶۴۳	۶۴۴	۶۴۵	۶۴۶	۶۴۷	۶۴۸	۶۴۹	۶۵۰	۶۵۱	۶۵۲	۶۵۳	۶۵۴	۶۵۵	۶۵۶	۶۵۷	۶۵۸	۶۵۹	۶۶۰	۶۶۱	۶۶۲	۶۶۳	۶۶۴	۶۶۵	۶۶۶	۶۶۷	۶۶۸	۶۶۹	۶۷۰	۶۷۱	۶۷۲	۶۷۳	۶۷۴	۶۷۵	۶۷۶	۶۷۷	۶۷۸	۶۷۹	۶۸۰	۶۸۱	۶۸۲	۶۸۳	۶۸۴	۶۸۵	۶۸۶	۶۸۷	۶۸۸	۶۸۹	۶۹۰	۶۹۱	۶۹۲	۶۹۳	۶۹۴	۶۹۵	۶۹۶	۶۹۷	۶۹۸	۶۹۹	۷۰۰
۷۰۱	۷۰۲	۷۰۳	۷۰۴	۷۰۵	۷۰۶	۷۰۷	۷۰۸	۷۰۹	۷۱۰	۷۱۱	۷۱۲	۷۱۳	۷۱۴	۷۱۵	۷۱۶	۷۱۷	۷۱۸	۷۱۹	۷۲۰	۷۲۱	۷۲۲	۷۲۳	۷۲۴	۷۲۵	۷۲۶	۷۲۷	۷۲۸	۷۲۹	۷۳۰	۷۳۱	۷۳۲	۷۳۳	۷۳۴	۷۳۵	۷۳۶	۷۳۷	۷۳۸	۷۳۹	۷۴۰	۷۴۱	۷۴۲	۷۴۳	۷۴۴	۷۴۵	۷۴۶	۷۴۷	۷۴۸	۷۴۹	۷۵۰	۷۵۱	۷۵۲	۷۵۳	۷۵۴	۷۵۵	۷۵۶	۷۵۷	۷۵۸	۷۵۹	۷۶۰	۷۶۱	۷۶۲	۷۶۳	۷۶۴	۷۶۵	۷۶۶	۷۶۷	۷۶۸	۷۶۹	۷۷۰	۷۷۱	۷۷۲	۷۷۳	۷۷۴	۷۷۵	۷۷۶	۷۷۷	۷۷۸	۷۷۹	۷۸۰	۷۸۱	۷۸۲	۷۸۳	۷۸۴	۷۸۵	۷۸۶	۷۸۷	۷۸۸	۷۸۹	۷۹۰	۷۹۱	۷۹۲	۷۹۳	۷۹۴	۷۹۵	۷۹۶	۷۹۷	۷۹۸	۷۹۹	۸۰۰
۸۰۱	۸۰۲	۸۰۳	۸۰۴	۸۰۵	۸۰۶	۸۰۷	۸۰۸	۸۰۹	۸۱۰	۸۱۱	۸۱۲	۸۱۳	۸۱۴	۸۱۵	۸۱۶	۸۱۷	۸۱۸	۸۱۹	۸۲۰	۸۲۱	۸۲۲	۸۲۳	۸۲۴	۸۲۵	۸۲۶	۸۲۷	۸۲۸	۸۲۹	۸۳۰	۸۳۱	۸۳۲	۸۳۳	۸۳۴	۸۳۵	۸۳۶	۸۳۷	۸۳۸	۸۳۹	۸۴۰	۸۴۱	۸۴۲	۸۴۳	۸۴۴	۸۴۵	۸۴۶	۸۴۷	۸۴۸	۸۴۹	۸۵۰	۸۵۱	۸۵۲	۸۵۳	۸۵۴	۸۵۵	۸۵۶	۸۵۷	۸۵۸	۸۵۹	۸۶۰	۸۶۱	۸۶۲	۸۶۳	۸۶۴	۸۶۵	۸۶۶	۸۶۷	۸۶۸	۸۶۹	۸۷۰	۸۷۱	۸۷۲	۸۷۳	۸۷۴	۸۷۵	۸۷۶	۸۷۷	۸۷۸	۸۷۹	۸۸۰	۸۸۱	۸۸۲	۸۸۳	۸۸۴	۸۸۵	۸۸۶	۸۸۷	۸۸۸	۸۸۹	۸۹۰	۸۹۱	۸۹۲	۸۹۳	۸۹۴	۸۹۵	۸۹۶	۸۹۷	۸۹۸	۸۹۹	۹۰۰
۹۰۱	۹۰۲	۹۰۳	۹۰۴	۹۰۵	۹۰۶	۹۰۷	۹۰۸	۹۰۹	۹۱۰	۹۱۱	۹۱۲	۹۱۳	۹۱۴	۹۱۵	۹۱۶	۹۱۷	۹۱۸	۹۱۹	۹۲۰	۹۲۱	۹۲۲	۹۲۳	۹۲۴	۹۲۵	۹۲۶	۹۲۷	۹۲۸	۹۲۹	۹۳۰	۹۳۱	۹۳۲	۹۳۳	۹۳۴	۹۳۵	۹۳۶	۹۳۷	۹۳۸	۹۳۹	۹۴۰	۹۴۱	۹۴۲	۹۴۳	۹۴۴	۹۴۵	۹۴۶	۹۴۷	۹۴۸	۹۴۹	۹۵۰	۹۵۱	۹۵۲	۹۵۳	۹۵۴	۹۵۵	۹۵۶	۹۵۷	۹۵۸	۹۵۹	۹۶۰	۹۶۱	۹۶۲	۹۶۳	۹۶۴	۹۶۵	۹۶۶	۹۶۷	۹۶۸	۹۶۹	۹۷۰	۹۷۱	۹۷۲	۹۷۳	۹۷۴	۹۷۵	۹۷۶	۹۷۷	۹۷۸	۹۷۹	۹۸۰	۹۸۱	۹۸۲	۹۸۳	۹۸۴	۹۸۵	۹۸۶	۹۸۷	۹۸۸	۹۸۹	۹۹۰	۹۹۱	۹۹۲	۹۹۳	۹۹۴	۹۹۵	۹۹۶	۹۹۷	۹۹۸	۹۹۹	۱۰۰۰

یقیناً ہر نماز کے بعد پڑھا جائے۔

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ الْهَامُّ الْوَاحِدُ أَوْحَنُ لَهُ مُسْلِمُونَ
 لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَلَا نَعْبُدُ إِلَّا إِيَّاهُ مُخْلِصِينَ لَهُ
 الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ رَبُّنَا
 وَرَبُّ آبَائِنَا الْأَوَّلِينَ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ وَحْدَهُ
 آمَنَ وَعْدُهُ وَصَدَقَ وَعْدُهُ وَفَرَغَ عِبَادَهُ وَأَعَزَّ جُنْدَهُ
 وَهَزَمَ الْأَحْزَابَ وَحْدَهُ فَلَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْخَلْدُ الْحَيُّ وَ
 يُمِيتُ وَهُوَ حَيٌّ لَا يَمُوتُ سَيِّدُ الْخَفِيِّ وَهُوَ عَلَى كُلِّ
 شَيْءٍ قَدِيرٌ بِسْمِ اللَّهِ يَاسْمُ لَا تَسْغُلُهُ سَمْعٌ عَنْ سَمْعٍ
 يَاسْمُ لَا يَغْلِظُهُ السَّائِلُونَ وَلَا يُبْرِمُهُ الْحَاحُ الْمَحِينُ
 أَذِي قَبِيْءٍ بَرْدِ عَفْوِكَ وَرَحْمَتِكَ وَمَغْفِرَتِكَ اَللّٰهُمَّ بِسْمِ
 كُوْرِي سُبْحَانَ اللَّهِ كَلِمَا سَبَّحَ اللَّهُ شَيْءٌ وَكَمَا يُحِبُّ اللَّهُ
 أَنْ يُسَبِّحَ وَكَمَا هُوَ أَهْلُهُ وَكَمَا يَسْبِغُ لِكَرَمِ وَجْهِهِ وَعَنْ
 حَلَالِهِ وَأَحْمَدُ لِلَّهِ كَلِمَا أَحَدَ اللَّهُ شَيْءٌ وَكَمَا يُحِبُّ اللَّهُ أَنْ
 يُحْمَدَ وَكَمَا هُوَ أَهْلُهُ وَكَمَا يَسْبِغُ لِجَمَالِهِ وَجْهِهِ وَعَنْ حَلَالِهِ

وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ كُلَّمَا مَلَكَ اللَّهُ شَيْئًا وَكَأَيْدِ اللَّهِ
أَنْ يَمْلَأَ وَكَأَيُّهَا أَهْلُهُ وَكَأَيُّهَا لِكُرْمِ وَجْهِهِ وَعِزِّ
جَلَالِهِ وَاللَّهُ أَكْبَرُ كُلَّمَا كَبَّرَ اللَّهُ شَيْئًا وَكَأَيْدِ اللَّهِ
أَنْ يَبْدَأَ رَوْثًا هُوَ أَهْلُهُ وَكَأَيُّهَا لِكُرْمِ وَجْهِهِ وَ
عِزِّ جَلَالِهِ سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ
وَاللَّهُ أَكْبَرُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ أَنْتُمْ تَهْتَكُونَ عَلَى كُلِّ
أَحَدٍ مِنْ سُلُوقِهِ مَنْ كَانَ أَوْ يَكُونُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ
اللَّهُ مُدْرِي أَسْأَلُكَ أَنْ تُصَلِّيَ عَلَى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَ
أَسْأَلُكَ خَيْرَ مَا أَرْجُو وَخَيْرَ مَا لَا أَرْجُو وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ
شَرِّ مَا لَحَذَرُهُ مِنْ شَرِّ مَا لَا أَخْذَرُهُ مِنْ شَرِّ مَنْ رَتَبَهُ
بِهِ اللَّهُ مُدْرِي مَنْ يَنْتَدِي بِكَ وَأَفِضْ عَلَيَّ مِنْ فَضْلِكَ
وَأَنْشُرْ عَلَيَّ مِنْ رَحْمَتِكَ وَأَنْزِلْ عَلَيَّ مِنْ بَرَكَاتِكَ
مِنْ رَتَبَةٍ أَعِيدُ نَفْسِي وَدِينِي وَمَالِي وَأَهْلِي
وَوُلْدِي وَخَوَاتِمَ عَلَيَّ وَأَخَوَاتِي فِي دِينِي وَدُنْيَايَ
وَمَا زُرْتَنِي رَبِّي وَمَنْ يُعِينِي أَمْرُهُ بِاللَّهِ الْإِلَهِ الصَّمَدِ

الَّذِي لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ وَرَبِّ
 الْفَلَقِ وَمِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ وَمِنْ
 شَرِّ النَّفَّاثَاتِ فِي الْعُقَدِ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ
 وَرَبِّ النَّاسِ يَلِكُ النَّاسِ إِلَهَ النَّاسِ مِنْ شَرِّ السَّوْاسِ
 الْخَنَاسِ الَّذِي يُوَسْوِسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ مِنَ الْجَنَّةِ
 وَالنَّاسِ وَبَعْدَ رُكُوعِ بَيْتِ كَعْبٍ اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ
 بِاسْمِكَ الْمَكْنُونِ الْخُرُونِ الطَّهْرِ الطَّاهِرِ الْمُبَارَكِ وَأَسْأَلُكَ
 بِاسْمِكَ الْعَظِيمِ وَسُلْطَانِكَ الْقَدِيمِ أَنْ تَصَلِّيَ عَلَى مُحَمَّدٍ
 وَآلِ مُحَمَّدٍ يَا وَاهِبُ الْهَيَا يَا مُطْلِقَ الْأَسَارِ يَا
 فَكَاهِ الرِّقَابِ مِنَ النَّارِ أَسْأَلُكَ أَنْ تَصَلِّيَ عَلَى مُحَمَّدٍ
 وَآلِ مُحَمَّدٍ وَأَنْ تُعْتِقَ رَقَّتِي مِنَ النَّارِ وَأَنْ تُخْرِجَنِي
 مِنَ الدُّنْيَا سَالِمًا وَتَدْخِلَنِي الْجَنَّةَ أَمِنًا وَأَنْ تَجْعَلَ
 دُعَائِي أَوَّلَهُ فَلَاحًا وَآوَسَطَهُ جَلَحًا وَآخِرَهُ صَلاَحًا
 إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ يَا بَارِئُ بَسْمِ دُعَائِي
 اللَّهُمَّ إِنِّي هَذِهِ صَلَاتِي صَلَّتُهَا إِلَّا لِحَاجَةٍ مِنْكَ إِلَيْهَا
 وَلَا رَغْبَةَ مِنْكَ فِيهَا إِلَّا تَعْظِيمًا وَطَاعَةً وَرَاجَاةً لَكَ بِهَا

مَا أَمَرْتَنِي بِهِ إِلَهِي إِنْ كَانَ فِيهَا نَقْصٌ أَوْ حُلٌّ مِنْ
كُلِّهَا أَوْ سُجُودٌ مَا فَلَا تَأْخُذْ بِي بِهِ وَتَقْتُلْ عَلَيَّ
بِالْقَوْلِ وَالْعَفْوَ إِنْ بِرَحْمَتِكَ يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ

تَعْقِيبُ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ نماز صبح

أَصْبَحْتُ اللَّهُمَّ مُعْتَصِمًا بِكَ أَمَّا كَ الْمُنْبَعِ الَّذِي
سَلَا طَاوِلٌ وَلَا يُجَاوِلُ مِنْ شَرِّ كُلِّ غَاشِمٍ وَطَارِقٍ
مِنْ سَائِرٍ مَنْ خَلَقْتَ وَمَا خَلَقْتَ مِنْ خَلْقِكَ الْقَامِتِ
وَالنَّاطِقِ فِي جَنَّةٍ مِنْ كُلِّ خَوْفٍ بِلَاسٍ سَائِغَةٍ
حَصْنَةٍ وَهِيَ وَلَا أَهْلَ بَيْتِ نَبِيِّكَ عَلَيْهِ وَعَلَيْهِمُ
السَّلَامُ مُحْتَجًّا مِنْ كُلِّ قَاصِدٍ لِي إِلَى آذِيَةِ مُحَمَّدٍ أَوْ
حَصِينِ الْإِخْلَاصِ فِي الْأَعْيُنِ أَوْ بِحَقِّهِمْ السَّلَامِ
بِحَبْلِهِمْ مُوقِنًا أَنَّ الْحَقَّ هُنَا وَمَعَهُمْ وَفِيهِمْ وَبِهِمْ
أَوْ أَلَى مَنْ وَالُوا وَأَعَادَى مَنْ عَادُوا وَأُجَانِبَ مَنْ
جَانَبُوا فَصَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَاعِزَّنِي اللَّهُمَّ بِهِمْ مِنْ
شَرِّ كُلِّ مَا أَتَيْتَنِيهِ يَا عَظِيمُ تَحَزَّنْتُ الْأَعَادَى عَنِّي بِدَلِيلِ

السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ أَتَجْعَلُنَا مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ سَدًّا
وَمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا أَوَعَشِينَا هُمْ قَوْمٌ لَا يَبْصُرُونَ

إِنَّمَا تَعْقِبُ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ نَارِ صَبَحِ

بِسْمِ اللَّهِ وَبِاللَّهِ وَصَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَأَفُوضُ
أَمْرِي إِلَى اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ فَوْقَهُ اللَّهُ
سَيِّئَاتٍ مَا مَكَرُوا لِإِلَهِ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانِكَ إِنِّي كُنْتُ
مِنَ الظَّالِمِينَ فَاسْتَجِبْنَا لَهُ وَمَخِّنَاهُ مِنْ أَلَمٍ وَكَذَلِكَ
تُنْفِى الْمُؤْمِنِينَ حَسْبَا اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ فَانْقَلِبُوا
بِنِعْمَةٍ مِنَ اللَّهِ وَفَضْلٍ لَمْ يَمْسَسْهُمْ سُوءٌ مِمَّا شَاءَ اللَّهُ
لَا أَحُولَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ مَا شَاءَ اللَّهُ لَا مَا شَاءَ
النَّاسُ مَا شَاءَ اللَّهُ وَلَوْ كَرِهَ النَّاسُ حَسْبِيَ الرَّبُّ مِنَ
الْمَرْبُوبِينَ حَسْبِيَ الْخَالِقُ مِنَ الْمَخْلُوقِينَ حَسْبِيَ الرَّازِقُ
مِنَ الْمَرْزُوقِينَ حَسْبِيَ رَبُّ الْعَالَمِينَ حَسْبِيَ مَنْ هُوَ
حَسْبِي حَسْبِي مَنْ لَمْ يَزَلْ حَسْبِي حَسْبِي مَنْ شَاءَ
مَنْذُكَتْ حَسْبِي حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ

تَوَكَّلْتُ وَهُوَ تَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ۝

عَقِيبُ نَمَازٍ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ نَمَازُ ظَهْرٍ

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ الْعَظِيمُ الْحَكِيمُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ رَبُّ
الْعَرْشِ الْكَرِيمِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ اللَّهُمَّ
إِنِّي أَسْأَلُكَ مُوجِبَاتِ رَحْمَتِكَ وَرَحِمَاتِكَ وَأَعِزِّمُ مَقِيفَ نَكَاتِكَ
وَالْغَنَمَةَ مِنْ كُلِّ بَرٍّ وَتِلْكَ أَمَانَةُ مَنْ كُلِّ إِنَّمَا اللَّهُمَّ لَا
تَدْخُلْنِي ذُنُوبًا لَا تُغْفَرُهَا وَلَا تُزَايِلُهَا إِلَّا كَشَفْتَهُ وَلَا تُلَاقِنِي
إِلَّا بِفَتْحِهِ وَلَا تُسْأَلُ إِلَّا بِشَفِيعَتِهِ وَلَا تُعَذِّبُ إِلَّا بِسِتْرَتِهِ
وَلَا تُزِقُّ إِلَّا بِسُطْرَتِهِ وَلَا تُخَوِّفُ إِلَّا بِأَمْرِهِ وَلَا تُسَوِّدُ إِلَّا
بِصَرْفَتِهِ وَلَا تُجَاجِلُنِي إِلَّا بِرِضَاؤِي فِيهَا صَلَاحُ إِلَّا
قَضَيْتَهَا يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ آمِينَ يَا رَبِّ الْعَالَمِينَ

عَقِيبُ نَمَازٍ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ عَقِيبُ

سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ
وَلَا تَحُولُ وَلَا قُوَّةُ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَظِيمِ سُبْحَانَ اللَّهِ

يَا اَعْدُوَّ وَالْاَصَالَ سُبْحَانَ اللَّهِ بِالْمَشْرِ وَالْاَرْضِ
 سُبْحَانَ اللَّهِ حِينَ تُمْسُونَ وَحِينَ تُصْبِحُونَ وَلِلَّهِ
 فِي السَّمَاوَاتِ وَالْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَحِينَ تُظْهِرُونَ
 سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ وَسَلَامٌ عَلَى
 الْمُرْسَلِينَ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ سُبْحَانَ ذِي الْمَلَكِ
 وَالْمَلَكُوتِ سُبْحَانَ ذِي الْعِزَّةِ وَالْجَبَرُوتِ سُبْحَانَ
 الْحَيِّ الَّذِي لَا يَمُوتُ سُبْحَانَ الْقَائِمِ الدَّامِ سُبْحَانَ الْحَيِّ الْقَيُّومِ سُبْحَانَ
 الْعَلِيِّ الْأَعْلَى سُبْحَانَهُ وَتَعَالَى اسْمُوحْ قُدُّوسٌ رَبُّنَا
 وَرَبُّ الْمَلَائِكَةِ وَالرُّوحِ اللَّهُمَّ ارْزُقْ ذَنبِي أَمْسِ
 مُتَجَبِّرًا بِعُيُوبِكَ وَخَوْفِي أَمْسِ مُتَجَبِّرًا بِأَمْنِكَ وَفَقْرِي
 أَمْسِ مُتَجَبِّرًا بِغَاثِكَ وَذُلِّي أَمْسِ مُتَجَبِّرًا بِعِزِّكَ اللَّهُمَّ
 صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَأَعْفِرْهُ وَأَجْمَعْهُ أَنْتَ حَمِيدٌ
 مُحَمَّدٌ أَكْبَرُ تَمَّ نَوْرُكَ فَهَكَيْتَ فَكَانَ الْحَمْدُ وَعَظُمَ
 حَمْدُكَ فَصَفَوْتَ قَلْبَكَ الْحَمْدُ وَجْهَكَ رَبَّنَا أَكْرَمُ
 الْوُجُوهِ وَجَاهُكَ أَكْبَرُ الْعَالَمِ وَعَظَمَتُكَ أَفْضَلُ
 الطَّاعَةِ طَاعَ رَبَّنَا فَتَشْكُرُوا لِعِظَمِ قِتْعَتِهِ وَتُحِبُّونَ لِحُضْرَتِهِ

وَلَكَيْشُ الضَّرِّ وَنَجْيُ مِنَ الْكُوبِ وَلَغْنُ الْفَقْرِ
وَشَفِي السَّقَمِ وَلَا يَجْازِي الْإِيَّاتُ أَحَدًا يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ
تَعْقِيبُ نَجْوَى بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ مَغْرِبُ

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ مُوَجِّباتِ رَحْمَتِكَ وَغَرَضَ عِلْمِ
مَغْفِرَتِكَ وَالسَّلَامَةَ مِنْ كُلِّ لَئِيمٍ وَالْغَنِيَةَ مِنْ كُلِّ
بَرٍّ وَالنَّجَاةَ مِنَ السَّارِ وَمِنْ كُلِّ بَلِيَّةٍ وَالْفَوْزَ بِالْجَنَّةِ
وَالرِّضْوَانِ فِي دَارِ السَّلَامِ وَجَازِئِكَ مُحَمَّدٍ وَآلِهِ
عَلَيْهِمُ السَّلَامُ اللَّهُمَّ مَا بَيْنَا مِنْ نِعْمَةٍ فَمِنَكَ لَا
إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ

تَعْقِيبُ نَجْوَى بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ عِشَاءُ

أَعُوذُ بِعِزَّةِ اللَّهِ وَأَعُوذُ بِقُدْرَةِ اللَّهِ وَأَعُوذُ بِمَغْفِرَةِ
اللَّهِ وَأَعُوذُ بِرَحْمَةِ اللَّهِ وَأَعُوذُ بِسُلْطَانِ اللَّهِ الَّذِي
هُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ وَأَعُوذُ بِصَدْرِ اللَّهِ وَأَعُوذُ
بِمَجْمَعِ اللَّهِ مِنْ شَرِّ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ وَشَيْطَانٍ مَرِيدٍ
وَكُلِّ مُمْتَلٍ وَسَارِقٍ وَغَارِضٍ وَمِنْ شَرِّ السَّامَةِ

وَالْهَامَّةِ وَالْعَامَّةِ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ دَابَّةٍ صَغِيرَةٍ أَوْ كَبِيرَةٍ
بَلِيلٍ أَوْ نَهَارٍ وَمِنْ شَرِّ فُسَّاقِ الْعَرَبِ وَالْعجمِ وَمُخَارِبِهِمْ
وَمِنْ شَرِّ فِسْقَةِ الْحَيِّ وَالْأَنْسِ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ دَابَّةٍ
أَنْتَ أَخَذْتَ بِصَاتِهَا إِنَّ رَبِّي عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ

در بیان طریقہ نماز اول بہرہ

حضرت امام محمد تقی علیہ السلام سے منقول ہے کہ جو شخص ہر ماہ کی
پہلی تاریخ کو دو رکعت نماز بجالائے پہلی رکعت میں
سورہ الحمد کے بعد تیس مرتبہ قل ہو اللہ احد اور دوسری
رکعت میں الحمد کے بعد تیس مرتبہ سورہ انا انزلنا پڑھے اور نماز
سے فارغ ہونیکے بعد فراق کو صدقہ دے جب ایسا کرے گا
تو سلامتی کے ساتھ وہ مہینہ گزرے گا اور سب ہنگام
نماز کے بعد دعا پڑھے۔

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا
وَمَا مِنْ مُسْتَقَرٍّ هَا وَهَسْتَوْدَعَهَا كُلٌّ فِي كِتَابٍ مُبِينٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَإِنْ يَمَسُّكَ اللَّهُ بُضْعًا فَلَا
كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ وَإِنْ يُرِيدْكَ تَخَرُّقًا لَرَادَ لِفَضْلِهِ يُصِيبُ
بِهِ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ بِسْمِ اللَّهِ
الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ سَيَجْعَلُ اللَّهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُسْرًا مَا شَاءَ اللَّهُ
لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ حُسْبُنَا اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ وَأَوْصِ
أَمْرِي إِلَى اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ لَا إِلَهَ إِلَّا
أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ رَبِّ إِنِّي لَمَّا
أَنْزَلْتَ إِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ تَقَرَّرْتُ لَا تَذَرْنِي فَرْدًا وَأَنْتَ
خَيْرُ الْوَارِثِينَ

چاند ویکتی و تہو عاے رویت ہلال پڑھنا چاہیے

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
إِنَّهَا الْحَقُّ الْمَطْبُوعُ الذِّكْرُ السَّرِيعُ الْمُرْتَدُّ فِي مَنَازِلِ
الْقُدْرَةِ الْمُتَصَرِّفُ فِي فَلَكَ التَّذَبُّرُ مَنْتَ مِنْ نَوْرِ
بِقِ الْقَلَمِ وَأَوْضَحَ بِكَ الْبُهِمَ وَجَعَلَ آيَةً مِنْ آيَاتِ
مَمْلُوكِهِ وَعَلَامَةً مِنْ عِلَامَاتِ سُلْطَانِهِ وَأَمْتَهَنَكَ
بِالزِّيَادَةِ وَالنَّقْصَانِ وَالطَّلُوعِ وَالْأَوَّلِ وَالْآخِرَةِ

وَالْكُفُوفِ فِي كُلِّ ذَالِكَ أَنْتَ لَهُ مُطِيعٌ وَالْإِلَادَةِ
سَبِيحٌ سُبْحَانَهُ مَا أَعْجَبَ مَا دَرَبِي أَمْرِكَ وَالطَّفَّ
مَا أَتَعَنَ فِي شَأْنِكَ جَعَلْتَ مُفْتَاحَ شَهْمِي حَادِثٌ لَأَمِي
حَادِثٌ فَاسْتَلِ اللَّهُ رَبِّي وَدَبَّكَ وَخَالِقِي وَخَالِقَكَ
وَمُقَدِّمِي وَمُقَدِّدَكَ وَمُصَوِّرِي وَمُصَوِّرَكَ أَنْ
يُصَلِّيَ عَلَى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَأَنْ يَجْعَلَكَ هِلَالٌ بَرَكَةٍ لَأَمِي
تَحْمُهَا الْيَا مُوَطَّأَةً لَا تُدَسُّهَا الْإِثَامُ هِلَالٌ آمِنٍ
مِنْ الْإِفَاتِ وَسَلَامَةٍ مِنَ السَّيِّئَاتِ هِلَالٌ سَعْدٍ
لَا يَخْشَى فِيهِ وَثْمٌ لَا نَكْدَ مَعَهُ وَثْمٌ لَا يَمَارِجُهُ عُسْرٌ وَ
خَيْرٌ لَا يَشَوُّبُهُ شَرٌّ هِلَالٌ آمِنٌ وَإِيمَانٌ وَنِعْمَةٌ وَإِحْسَانٌ وَ
سَلَامَةٌ وَإِسْلَامٌ اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَاجْعَلْنَا مِنْ
أَرْضِي مَنْ طَلَعَ عَلَيْهِ وَأَرَى مَنْ نَظَرَ إِلَيْهِ وَأَسْعَدَ مَنْ تَعَبَدَ
لَكَ فِيهِ وَوَفَّقْنَا فِيهِ لِلتَّوْبَةِ وَاعْصِمْنَا فِيهِ مِنَ الْخَوْبَةِ وَاجْعَلْنَا
فِيهِ مِنْ مُبَاشَرٍ بِمَعْصِيَتِكَ وَأَوْزَعَا فِيهِ شُكْرَ نِعْمَتِكَ وَلَنَا
فِيهِ جَنَّةَ الْعَافِيَةِ وَأَمْنًا عَلَيْنَا بِاسْتِكَالِ طَاعَتِكَ فِيهِ الْمُنَّةَ
إِنَّكَ لَلْكَافِرِ الْحَمِيدُ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ الطَّيِّبِينَ الطَّاهِرِينَ

	ہر ماہ کا چاند دیکھتے وقت یہ اسامہا بار دیکھو					
محرم	محمّد	لا	فاطمہ	الحسن	برہم	صفہ
سولہوی	لا	محمّد	جعفر	موسیٰ	لا	آئینہ دیکھ
ربیع الاول	محمّد	لا	برہم	ابو القاسم	تبع علیہ	ربیع الثانی
پانی دیکھ	نور علی	نور علی	ابو بکر	نور علی	نور علی	یکرا دیکھ
جمادی الاول	نور علی	نور علی	سنجی	نور علی	نور علی	جمادی الثانی
چاند دیکھ	نور علی	نور علی	نور علی	نور علی	نور علی	بند کچ دیکھ
حَب	نور علی	نور علی	نور علی	نور علی	نور علی	شعبان
قرآن پڑھو	نور علی	نور علی	نور علی	نور علی	نور علی	برائی دیکھ
رمضان	نور علی	نور علی	نور علی	نور علی	نور علی	شوال
توار دیکھ	نور علی	نور علی	نور علی	نور علی	نور علی	بنی دیکھ
قعدہ	نور علی	نور علی	نور علی	نور علی	نور علی	ذی
ذی	نور علی	نور علی	نور علی	نور علی	نور علی	ذی
نور علی	نور علی	نور علی	نور علی	نور علی	نور علی	نور علی

دُعَاءُ مَالِكٍ دَاعِيًا إِلَى الْبِرِّ وَنَهًا عَنِ الْمُنكَرِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
 نَادِ عَلِيًّا مَظْهَرَ الْعَجَائِبِ تَجِدُهُ عَوْنًا لَكَ فِي النَّوَائِبِ
 كُلِّ هَمٍّ وَغَمٍّ إِلَى اللَّهِ حَاجَتِي وَعَلَيْهِ مَعْوَلِي كُلِّ
 رَمَيْتٍ مُقَاضِي فِي اللَّهِ وَيَدُ اللَّهِ لِي وَلِيَ اللَّهُ أَدْعُوكَ
 كُلِّ هَمٍّ وَغَمٍّ سَيِّئِي بِعِظَمَتِكَ يَا اللَّهُ وَبِنَبْوَتِكَ يَا مُحَمَّدُ
 صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ وَتَوَلَّيْتُكَ يَا عَلِيُّ يَا عَلِيُّ
 يَا عَلِيُّ أَدْرِكْنِي بِحَقِّ لُطْفِكَ الْخَفِيِّ اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ
 أَنَا مِنْ شَرِّ أَعْدَائِكَ بَرِيٌّ بَرِيٌّ اللَّهُ صَدَّقَنِي بِحَقِّ
 أَمْرِكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ يَا أَبَا الْعَيْثِ أَعِثْنِي يَا عَلِيُّ
 أَدْرِكْنِي يَا قَاهِرَ الْعَدُوِّ يَا وَالِيَّ الْوَلِيِّ يَا مَظْهَرَ الْعَجَائِبِ
 يَا مُرْتَضَى عَلِيٍّ يَا قَهَّارَ تَقَهَّرَتْ بِالْقَهْرِ وَالْقَهْرُ فِي قَهْرِكَ
 يَا قَهَّارَ يَا ذَا الْبَطْشِ الشَّدِيدِ أَنْتَ الْقَاهِرُ الْجَبَّارُ
 أَلْهَلِكُ الْمُنْتَقِمُ الْقَوِيُّ الَّذِي لَا يَطَاقُ انْتِقَامُهُ
 وَأَوْفَوْضُ أَمْرِي إِلَى اللَّهِ أَنْتَ اللَّهُ تَبَصَّرَ بِالْعِبَادِ
 وَالْهَكْمُ لِلَّهِ وَاحِدٌ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ

حَسْبِيَ اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ نِعْمَ الْمَوْلَى وَنِعْمَ النَّصِيرُ
يَا غِيَاثَ الْمُسْتَغِيثِينَ آغِثْنِي يَا زَا حِمَّ الْمَسْكِينِ آوِجِي
يَا عَلِيَّ أَدْرِ كَيْفَ يَا عَلِيَّ أَدْرِ كَيْفَ يَا عَلِيَّ أَدْرِ كَيْفَ
يَرْحِمُكَ يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ

صبح و شام یا روزانہ یا ہر نماز کے بعد یہ زیارات
پڑھنا باعث ثواب و اجر جزیل ہے و جو بھی شہنوی ^{جلال}
زیارت خاتم الحسن علیہ السلام

السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا أَبَا عَبْدِ اللَّهِ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا بْنَ
رَسُولِ اللَّهِ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا بْنَ أَمِيرِ الْمُؤْمِنِينَ
وَأَنْتَ سَيِّدُ الْوَصِيِّينَ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا بْنَ سَيِّدَةِ
النِّسَاءِ الْعَالَمِينَ السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ

زیارت جناب علی بن موسی الرضا علیہ السلام
السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا شَمْسَ الْفَضْلِ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا
بَدْرَ الدُّجَى السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا غَرِيبَ الْغُرَى يَا سَلَامَ
عَلَيْكَ يَا مُعِزَّ الضُّعَفَاءِ وَالْفُقَرَاءِ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا
مُعِيتَ الشِّيعَةِ وَالزُّوَارِفِ نِعْمَ الْحُجَّةُ السَّلَامُ

عَلَيْكَ يَا ثَامِينَ الْأُمَمَةِ يَا عَلِيَّ بْنَ مُوسَى الرَّضَاءِ
وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ

بِإِذْنِ خَلِيفَةِ الرَّسُولِ عَلَيْهِ السَّلَامُ

السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صَاحِبَ الثَّوَمَانِ السَّلَامُ عَلَيْكَ
يَا خَلِيفَةَ الرَّحْمَنِ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا إِمَامَ الْأُمَمِ
وَالْجَمَانِ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا شَرِيكَ الْقُرْآنِ السَّلَامُ
عَلَيْكَ يَا إِمَامَ دُرِّ مَانِ هَذَا الْعَجَلِ اللَّهُ فَرَحَكَ وَفَعَلَ
اللَّهُ مَحْرَجَكَ السَّلَامُ عَلَيْكَ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ
يَوْمَ بَوَّاتِ سَارِي سَمْعٍ وَصَبَّحَ وَشَامَ وَبَعْدَ سَمْعٍ وَبَعْدَ سَمْعٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ بِسْمِ اللَّهِ وَاللَّهُ وَمِنَ اللَّهِ وَإِلَى اللَّهِ
وَفِي سَبِيلِ اللَّهِ اللَّهُمَّ أَلَيْكَ أَسَلْتُ نَفْسِي وَالنَّاسَ وَجَعَلْتُ
وَحْيِي وَالنَّاسَ وَجَعَلْتُ مَرِي فَاخْفِظْنِي بِحِفْظِ الْإِيمَانِ مِنْ بَيْنِ يَدَيْ
وَمِنْ خَلْفِي وَعَنْ يَمِينِي وَعَنْ شِمَالِي وَمِنْ قُدْرِي وَمِنْ عِثْرِي فَارْفَعْ
عَنِّي بَحُولِي وَقُوَّتِي فَإِنَّهُ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ
الْعَظِيمِ بِسْمِ اللَّهِ أَمَنْتُ بِاللَّهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ مَا شَاءَ اللَّهُ

لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ رَقْمُ حَسَنِ عَلَيْهِ السَّلَامُ فِي الْكُرْمِ
أَمْرٌ بِحَسَنِ عَلَيْهِ السَّلَامُ فِي الْكُرْمِ





مطبع حیدری

واقعہ چہ بازار مقابل بابہ دی حیدر آباد کن
کے قیام کا خاص مقصد یہ ہے کہ پیر و انائمہ اہلہ علیہم السلام کی
خدمات بجالا دے اور کتب دینیہ کے اشاعت میں حصہ لے اور کتب
مفوضہ خوش اسلوبی سے انجام دے کام خوش خط عمدہ جلد اور
برقت دیا جاتا ہے باوجود اسکے بازار کے مقابل میں نرخ ہی کم رکھا گیا
ہے امید کہ مومنین خاص توجہ فرما کر ہر قسم کا کام اس مطبع سے لینے
اصلاح سے جیو انا مقصود ہو تو بذریعہ خدا و کائنات نرخ طے فرمائیں۔

کتب خانہ حیدری

میں ہر قسم کی عربی فارسی اردو خصوصاً مذہبی کتب بعض فروخت
موجود ہیں قیمت بازار سے بالعموم ازان لیجاتی ہے فرمائش آپ نے
بہت جلد قیمت مناسب اصلاع اور سند و ستان میں بذریعہ دی آبی
روانہ کئے جاتے ہیں اگر کتب خانہ میں کوئی کتاب موجود نہ ہو تو بہ قیمت مناسب
ہیا کئے جاتے ہیں قیمت کتب دریافت کرنے پر فوری جواب دیا جاتا ہے
ایران معر وغیرہ کے کثیر کتب موجود ہیں مکمل فہرست طلب کرنے پر ارسال
کیا جاتا ہے امید کہ اہل اسلام اہل اسلامی کتب خانہ بنانے میں توجہ فرمائیں
شیخ الاسلام ہر قسم مطبع و کتب خانہ حیدری حیدر آباد کن

۱۰۰ شهادت حاصل می شود و درجات شوکت قیمت ۱۰۰ جلد
 ۱۰۱ خدمت کاغذ چکان ۱۰۰ جلد ۱۰۰ کاغذ کبر ۱۰۰ جلد ۱۰۰
 ۱۰۲ خدمت کاغذ چکان ۱۰۰ جلد ۱۰۰ کاغذ کبر ۱۰۰ جلد ۱۰۰
 ۱۰۳ خان زهره ای آنکه خراش می نمود و درجات سرودت
 کاغذ چکان ۱۰۰ جلد ۱۰۰ کاغذ کبر ۱۰۰ جلد ۱۰۰
 ۱۰۴ خدمت کاغذ چکان ۱۰۰ جلد ۱۰۰ کاغذ کبر ۱۰۰ جلد ۱۰۰
 ۱۰۵ بیاض الی ۱۰۰ جلد و درجات لایق قیمت ۱۰۰ جلد ۱۰۰
 ۱۰۶ عزاسلام هم یعنی جود و درجات شرافت ۱۰۰ کاغذ کبر ۱۰۰
 ۱۰۷ جلد ۱۰۰ بیاض الی ۱۰۰ جلد و درجات اقبال ۱۰۰
 ۱۰۸ فرط غم جود و درجات غم ۱۰۰ جلد ۱۰۰ کاغذ کبر ۱۰۰
 ۱۰۹ قیمت ۱۰۰ جلد ۱۰۰ جود و درجات غم ۱۰۰ کاغذ کبر ۱۰۰
 ۱۱۰ خدمت کاغذ چکان ۱۰۰ جلد ۱۰۰ کاغذ کبر ۱۰۰
 ۱۱۱ جود زیارت عاشقان ۱۰۰ جلد ۱۰۰ کاغذ کبر ۱۰۰
 ۱۱۲ خدمت کاغذ چکان ۱۰۰ جلد ۱۰۰ کاغذ کبر ۱۰۰

یہ کتاب کے جو حقوق بذریعہ برہنہ شیخی مکتبہ کتب
 عربیہ میں ایک ناکولی صاحب جزا یا نگار کسی بیان میں چلائے
 یا سودائے کا خیال نہ فرمائیں والا عرض فائزہ کے نقصان کثیر
 انہما تھکے ان جتنے نسخے مطلوب ہو سے طلب فرمائیں۔
 ہٹ جس کتاب پر بھی مطلع نہ ہو وہ ال مسروقہ بھی جائے۔
 ہٹ دن جلد کے خریدار کو ایک جلد اور ۱۰ جلد کے خریدار کو ۱۰ جلد
 مفت دے جائینگے۔

ہٹ تجد کو کیشن دیا جائیگا جو ذریعہ خط و کتابت تصفیہ کریں۔

مؤمنین سے ضروری باتیں

پالس عزامین یہ کتاب تقسیم کر چکے لئے نہایت ضروری
 ہے اور یہ ایسی تبرک ہے جو دنیا میں بالکثرت یادگار اور آخرت میں
 موجب حصول ثواب ہے اگر مؤمنین اس عرض سے زیادہ بھی
 خریدیں تو اس سے کچھ اور بھی جو بذریعہ خط و کتابت دینا مقصود
 ہے شکر رکھو و بہر کتاب ضروری و قابل امداد چاہئے اور جو

